Set - B

CBSE X	**MT EDUCARE LTD.** SUBJECT : **HINDI COURSE - A** **SEMI PRELIM - I** **MODEL ANSWER PAPER**	Marks : 80 Time : 3 hrs.
Date :		

	खण्ड: 'क'	
A.1.		
(क)	प्रकृति मनुष्य को यह याद दिलाती है कि वह आज भी लाखों वर्ष का नखदंतावलंबी प्राणी है और यही कारण है कि प्रकृति मनुष्य के नाखून को बढ़ाती रहती है ।	**2**
(ख)	नाखूनों के बारे में लेखक का यह कहना है कि किसी समय में नाखून मनुष्य के शिकार एवं जीवन-रक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक रहे होंगे । अस्त्रों के आने से धीरे-धीरे इनका महत्व कम हो गया ।	**2**
(ग)	नाखून काटना मानव की पशुता को समाप्त करने की निशानी है परंतु मनुष्य आज पहले से भी अधिक खूँखार प्राणी हो गया है ।	**2**
(घ)	शीर्षक - नाखूनों का बढ़ना और काटना ।	**1**
(ङ)	नाखून के बारे में प्राणिशास्त्रियों का निश्चित मत है कि नाखून बढ़ने के कारण शरीर ने इन्हें स्थायी रूप से अपना लिया है ।	**1**
A.2.		
(क)	झपटते बाज और फन उठाए साँप में कवि को इसलिए सौंदर्य नजर आता है क्योंकि दोनों पेट भरने के लिए ऐसा कर रहे हैं ।	**2**
(ख)	कवि ने विभिन्न पशु-पक्षियों को संघर्ष की मुद्रा में दिखाया है । ऐसा दिखाकर वह प्रेरणा देना चाहता है कि रोटी के लिए घोर परिश्रम करो ।	**2**
(ग)	इस कविता से भूख शांत करने के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है ।	**1**
(घ)	कवि कहता है कि आदमी तभी सुंदर दिखता है, वह भी रोजी-रोटी के लिए संघर्ष करता है ।	**1**
(ङ)	भूख और संघर्ष ।	**1**
	खण्ड: 'ख'	
A.3.		
(क)	जो व्यक्ति परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है ।	**1**
(ख)	मैंने एक बहुत लंबा व्यक्ति देखा ।	**1**
(ग)	मिश्र वाक्य ।	**1**
A.4.		
(क)	मुझसे नहीं चला जाता है ।	**1**
(ख)	मंत्री जी ने उद्घाटन किया ।	**1**

(ग)	उन्होंने कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया ।	**1**
(घ)	माँ द्वारा अवनि को पढ़ाया गया ।	**1**
A.5.		
(क)	सूरदास श्रृंगार रस के कवि थे ।	**1**
	सूरदास – संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक, 'थे' क्रिया का कर्ता ।	
	कवि – संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृपूरक, 'सूरदास' कर्ता का पूरक ।	
(ख)	मैं बारहवीं कक्षा में पढ़ता हूँ ।	**1**
	मैं – सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, 'पढ़ता हूँ' क्रिया का कर्ता।	
	बारहवीं – विशेषण, संख्यावाची, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य का विशेषण ।	
	पढ़ता हूँ – क्रिया, वर्तमान काल, नित्यताबोधक पक्ष, एकवचन, पुल्लिंग, 'मैं' कर्ता की क्रिया, प्रथम पुरुष का अनुसारी रूप कर्तृवाच्य ।	
(ग)	वह अचानक गिर पड़ा ।	**1**
	वह – सर्वनाम, अन्यपुरुष सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, 'गिर पड़ा' क्रिया का कर्ता, कर्ता कारक ।	
	अचानक – अव्यव, क्रियाविशेषण, 'गिर पड़ना' क्रिया की विशेषता ।	
(घ)	हम देहरादून घूमने गए ।	**1**
	हम – सर्वनाम, प्रथम पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता ।	
A.6.		
(क)	नायक-नायिका के प्रेम को देखकर श्रृंगार रस प्रकट होता है । इसका संबंध 'रति' और 'काम'.... से है । यह सृष्टि का सबसे व्यापक भाव है जो सभी प्राणियों में पाया जाता है । इसलिए इसे 'रसराज' भी कहा जाता है । इसके दो प्रमुख प्रकार हैं -	**1**
(ख)	**स्थायी भाव** - उत्साह ।	**1**
(ग)	अश्रु बहाना, अलौकिक प्रसन्नता, रोमांच ।	**1**
(घ)	हा सही न जाती मुझसे अब आज भूख की ज्वाला । कल से ही प्यास लगी है हो रहा हृदय मतवाला । सुनती हूँ तू राजा है मैं प्यारी बेटी तेरी । क्या दया न आती तुझको यह दशा देखकर मेरी ।	**1**

खण्ड: 'ग'

A.7.

(क) हालदार साहब सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति को बिना चश्मे के नहीं देख सकते थे । उनका देशभक्त मन कहता था कि इस कस्बे में कोई तो सुभाष का सम्मान करने वाला हो, उन्हें चश्मा पहनाने वाला हो, परंतु अब चश्मे वाला कैप्टन मर चुका था । उन्हें लगता था कि सुभाष की मूर्ति बिना चश्मे के होगी । वे उसे इस तरह से देखने से बचना चाहते थे इसलिए उन्होंने कस्बे मैं जीप रोकने से मना कर दिया । **2**

(ख) हालदार साहब ने अपने ड्राइवर को आदेश दिया कि वह कस्बे के चौराहे पर जीप न रोके । क्यों-उन्होंने ड्राइवर को तो यह कहा कि आज बहुत काम है । पान कहीं और खा लेंग, परंतु वास्तविक कारण यह था कि वे बिना चश्मे वाली सुभाष की मूर्ति को देखना नहीं चाहते थे । **2**

(ग) राह चलते लोग हालदार साहब की ओर इसलिए देखने लगे क्योंकि उन्होंने अचानक तेजी से जीप रुकवाई थी । उसके बाद वे जीप से उतर कर सुभाष की मूर्ति की तरफ चल पड़े इसलिए लोग कौतूहलवश उन्हें देखने लगे । **1**

A.8.

(क) चश्मे वाला कभी सेनानी नहीं रहा । वह तन से बहुत बूढ़ा और मरियल-सा था परंतु उसके मन में देशभक्ति की भावना प्रबल थी । वह सुभाषचंद्र का सम्मान करता था । वह सुभाष की बिना चश्मे वाली मूर्ति को देखकर आहत था । इसलिए अपनी ओर से एक चश्मा नेताजी की मूर्ति पर अवश्य लगाता था । उसकी इसी भावना को देखकर ही लोगों ने उसे सुभाषचंद्र बोस का साथी या सेना का कैप्टन कहकर सम्मान दिया । चाहे उसका यह नाम व्यंग्य में रखा गया हो, फिर भी वह ठीक नाम था । वह कस्बे का अगुआ था । **2**

(ख) भगत की पुत्रवधू जानती थी कि भगत जी संसार में अकेले हैं । उनका एकमात्र पुत्र मर चुका है । वे बूढ़े हैं और भक्त हैं । उन्हें घर-बार और संसार में कोई रुचि नहीं है । अतः वे अपने खाने-पीने और स्वास्थ्य की ओर भी ध्यान नहीं दे पाएँगे । इसलिए वह सेवा-भाव से उनके चरणों की छाया में अपने दिन बिताना चाहती थी । वह उनके लिए भोजन और दवा-दारु का प्रबंध करना चाहती थी । **2**

(ग) बालगोबिन भगत प्रभु-भक्ति के मस्ती-भरे गीत गाया करते थे । उनके गानों में सच्ची टेर होती थी । उनका स्वर इतना मोहक, ऊँचा और आरोही होता था कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते थे । औरतें उस गीत को गुनगुनाने लगती थीं । खेतों में काम करने वाले किसानों के हाथ और पाँव एक विशेष लय में चलने लगते थे । उनकी संगीत में जादुई प्रभाव था । वह मनमोहक प्रभाव सारे वातावरण पर छा जाता था । यहाँ तक कि घनघोर सर्दी और गर्मियों की उमस भी उन्हें डिगा नहीं पाती थी । **2**

(घ)	हम यशपाल के विचारों से सहमत हैं। बिना घटना, बिना पात्र और बिना विचार के कहानी नहीं लिखी जा सकती। कहानी का अर्थ ही है - 'क्या हुआ' उसे कहना । अतः जब घटना नहीं होगी तो यह कैसे पता चलेगा कि क्या हुआ ? बिना पात्रों के कुछ होगा कैसे, घटेगा कैसे ? कहानी में कोई-न कोई विचार, बात या उद्देश्य भी अवश्य होता है ।	2
A.9.		
(क)	इसमें कृष्ण पर व्यंग है । उन्होंने जीवन भर दूसरों के अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया, परंतु अब वे स्वयं उनसे प्रेम न रखकर उनके साथ अन्याय कर रहे हैं ।	2
(ख)	प्राचीन राजा इसलिए भले होते थे क्योंकि वे प्रजा के हित के लिए मारे - मारे फिरते थे । यह कहकर वे बताना चाहती हैं कि कृष्ण ने उन्हें प्रेम के बदले योग का संदेश भेजकर अच्छा नहीं किया ।	2
(ग)	गोपियों को लगता है कि योग - वैराग्य से उनका कृष्ण से मोह छूट जाएगा । इस प्रकार कृष्ण के प्रेम में रँगा उनका मन उन्हें वापस मिल जाएगा ।	1
A.10.		
(क)	उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की गई है - १. कमल के पत्तों से, जो जल में रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होते । २. जल में पड़ी तेल की बूँद से, जो जल में घुलती - मिलती नहीं । उद्धव भी इनके समान हैं, वे कृष्ण के संग रहकर भी उनके प्रेम से प्रभावित नहीं हो सके ।	2
(ख)	परशुराम के क्रोध पर लक्ष्मण ने निम्नलिखित तर्क दिए - - बचपन में हमसे कितने ही धनुष टूटे, परंतु आपने उन पर कभी क्रोध नहीं किया । इस विशेंष धनुष पर आपकी क्या ममता है ? - हमारी नजर में तो सब धनुष एक- समान होते हैं । फिर इस धनुष पर इतना होहल्ला क्यों ? - इस पुराने धनुष को तोड़ने से हमें क्या मिलना था । - राम ने तो इस धनुष को छुआ ही था कि यह अपने-आप टूट गया । इसमें राम का कोई दोष नहीं ।	2
(ग)	यद्यपि स्वयं कवि यही कहता है कि अपने जीवन की ऐसी कोई महान उपलब्धि नहीं है जिसकी सराहना की जाए । कवि अच्छी तरह से जानता है कि अभावों से भरी जिन्दगी का चित्रण करने में उपहास ही होता है । यह जानते हुए अभावग्रस्त जीवन का उल्लेख कर अपना उपहास करना नहीं चाहता है । कवि का यह भी मानना है कि आत्मकथा में सुप्त पीड़ाओं	

	को पुनः जीवन्त कर स्वयं को पीड़ित करना है । अतः वह आत्मकथा लिखने से बचना चाहता है ।	2
(घ)	कवि आत्मकथा को लिखने का उचित समय नहीं मानता है क्योंकि अभी तक के जीवन में ऐसी कोई महानता नहीं है जिसके उल्लेख से लोगों को प्रेरणा मिले । कवि ऐसा इसलिए कहता है कि जीवन की अनेक व्यथा संचित है, उन्हें सुप्त जानकर शान्त चित्त हूँ । उन्हें पुनःस्मरण कर जीवन को व्यथित नहीं करना चाहता हूँ । कवि अपनी दुर्बलताओं और प्रेम के क्षणों को सबके सम्मुख प्रकट भी नहीं करना चाहता है । ऐसा करना उसे उचित नहीं लगता है ।	2
A.11.		
	सरकारी-तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह उसकी इस मानसिकता को दर्शाती है - - सरकारी-तंत्र पहले से जागरूक नहीं रहता । जब मौका आता है तभी उसकी नींद खुलती है । - सरकारी- तंत्र मीटिंगों पर चलता है । छोटी- छोटी बात पर सिर्फ मीटिंग बुला ली जाती है, होता कुछ नहीं है । - उच्च स्तर पर मशविरा तो होता है पर बुद्धि के मामले में सब पैदल होते हैं । - सरकारी तंत्र में एक विभाग दूसरे विभाग पर अपनी जिम्मेदारी डालकर स्वयं छुटकारा पाने की कोशिश करता है । - ढूँढने पर फाइलों में कुछ नहीं मिलता । - अफसर दिखावटी चिंता करते हैं । - अफसरों में चापलूसी की प्रवृत्ति होती है । अथवा भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेल की सामग्री - **दुकानों का खेल** :- मिठाई की दुकान- ढेले के लड्डू,पत्तों की पूरी-कचौरियाँ, गीली मिट्टी की जलेबियाँ । फूटे घड़े के टूकड़ों के बताशे, पानी के घी, धूल के पिसान, बालू की चीनी भोजन-सामग्री आदि । **बारात का खेल** :- कनस्तर का तंबूरा, आम क पौधे की शहनाई चूहेदानी की पालकी खटोली की डोली । अर्थात् भोलानाथ और उसके साथियों के खेल दैनिक जीवन की घटनाओं से जुड़े होते थे तथा उनकी खेल - सामग्री सामान्य चीजें हुआ करती थी । खेल की सामग्रियाँ बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित थी । घर की अनुपयोगी वस्तु ही उनके खेल की सामग्री बन जाती थी । **हमारे खेल और खेल की सामग्री** :- आज खेल सामग्री स्वनिर्मित न होकर बाजार से खरीदी	4

हुई होती हे । क्रिकेट के बैट, गेंद, विकेट । प्लास्टिक के खिलौने इलेक्ट्रानिक मँहगे खिलौने आदि ।

दोनों प्रकार की सामग्री में काफी भिन्नता है । उस समय खेलने की सीमा नहीं थी, अब खेलने की सीमा निर्धारित हो चुकी है । पहले खेलने की स्वच्छंदता थी, अब खेलने की स्वच्छंदता नहीं है । अब धूल-मिट्टी से बच्चों का परिचय भी नहीं होता ।

खण्ड: 'घ'

A.12.

(क) **नगर और गाँव की तुलना** – भारतीय गाँव और महानगर में वही संबंध है, जो सीधे–सादे बूढ़े बाप और उसकी अल्ट्रा माडर्न संतान में होता है । गाँव शहरों को सींचते हैं, उन्हें धन, श्रम, माल देते हैं; परंतु शहर फिर भी गाँवों की ओर ताकते तक नहीं । **10**

गाँवों के सुख – भारत की अधिकांश जनता गाँव में रहकर खेती करती है । गाँवों में प्रकृति का साथ रहता है । लंबे–चौड़े खेत, बाग–बगीचे, कोयल की कूक, सर्दी–गर्मी–बरसात का पूरा आनंद ग्रामीण जीवन में ही लिया जा सकता है । प्रकृति की गोद में प्रदूषण का नहीं, सर्वत्र हरियाली, स्वच्छता और स्वास्थ्य का साम्राज्य रहता है ।

गाँवों के दुख – दुर्भाग्य से आज गाँवों में अभाव ही अभाव हैं । न सड़कें, न बिजली, न पानी, न आधुनिक वस्तुएँ । सब चीजों के लिए शहरों की ओर ताकना पड़ता है । डॉक्टरों के नाम पर नीम–हकीम या आर.एम.पी.; स्कूलों के नाम पर अनाथालय से विद्यालय, सफाई के नाम पर कूड़े के ढेर, गोबर और कीचड़ से लथपथ ज़िंदगी को देखकर सचमुच वहाँ रहने का मन नहीं करता ।

महानगरों के सुख – महानगरों की ज़िंदगी अत्यंत सुखदायी है । यहाँ सब प्रकार की आधुनिकतम सुविधाएँ उपलब्ध हैं । महानगर में रहने वाला व्यक्ति २४ घंटे अपने लिए मनोरंजन की सामग्री सामने पाता है । विश्व के सभी देशों से सीधे संपर्क कर सकता है । यहाँ की ज़िंदगी आराम और सुख से भरी हुई है ।

महानगरों के दुख – महानगरों के पास सारे सुख–साधन तो हैं परंतु फिर भी यहाँ का आदमी सुखी नहीं है । यहाँ निरंतर संघर्ष, होड़, ईर्ष्या, षड्यंत्र, दुर्घटना का बोलबाला है । यहाँ के सभी निवासी ऊँचे उठने और उड़ने के लिए आतुर हैं । इसके लिए आपसी खींचतान और स्वार्थ का जमकर प्रदर्शन होता है । महानगरों में रिश्तों के मधुर संबंध गायब हो गए हैं । चकाचौंध के मारे लोग आत्मीयता और स्नेह का रस खो बैठे हैं ।

प्रदूषण – महानगरों में बढ़ता हुआ प्रदूषण और बढ़ती हुई दुर्घटनाएँ और भी चिंता का कारण हैं । धुएँ, शोर और कृत्रिमता के कारण महानगरों में खान–पान, रहन–सहन पवित्र नहीं रह गया है । रोज ढेर सारा धुआँ और पेट्रोल हमारी साँसों में चला जाता है । सड़कों पर भीड़ इतनी बढ़ गई है कि नित्य जानलेवा दुर्घटनाएँ बढ़ रही हैं ।

निष्कर्ष – वास्तव में गाँव और महानगर–दोनों के अपने–अपने सुख और दुख हैं । यदि गाँवों में महानगरों की सुख–सुविधाएँ बढ़ा दी जाएँ और महानगरों में गाँवों की सहजता, सादगी, आत्मीयता उत्पन्न कर दी जाए तो दोनों जगहें आनंदमयी हो सकती हैं ।

(ख) **वन और पर्यावरण** – वन और पर्यावरण का गहरा संबंध है । ये सचमुच जीवनदायक हैं । ये वर्षा लाने में सहायक होते हैं और धरती की उपजाऊ - शक्ति को बढ़ाते हैं । वन ही वर्षा के धारासार जल को अपने भीतर सोखकर खतरा रोकते हैं । यही रुका हुआ जल धीरे - धीरे सारे पर्यावरण में पुनः चला जाता है । वनों की कृपा से ही मिट्टी का कटाव रुकता है । सूखा कम पड़ता है तथा रेगिस्तान का फैलाव रुकता है ।

प्रदूषण - निवारण में सहायक – आज हमारे जीवन की सबसे बड़ी समस्या है - पर्यावरण - प्रदूषण । कार्बनडाईआक्साइड, गंदा धुआँ कर्णभेदी आवाज, दूषित जल - इन सबका अचूक उपाय है - वन ।

वन हमारे द्वारा छोड़ी गई गंदी साँसों (कार्बन डाईआक्साइड) को भोजन के रूप में ले लेते हैं और बदले में हमें जीवनदायी आक्सीजन प्रदान करते हैं । इन्हीं जंगलों में असंख्य,अलभ्य जीव - जंतु निवास करते हैं जिनकी कृपा से प्राकृतिक संतुलन बना रहता है । आज शहरों में लगातार ध्वनि - प्रदूषण बढ़ रहा है । वन और वृक्ष ध्वनि - प्रदूषण भी रोकते हैं । यदि शहरों में उचित अनुपात में पेड़ लगा दिए जाएँ तो प्रदूषण की भयंकर समस्या का समाधान हो सकता है । परमाणु ऊर्जा के खतरे को तथा अत्यधिक ताप को रोकने का सशक्त उपाय भी वनों के पास है ।

वनों की अन्य उपयोगिता - वन ही नदियों, झरनों और अन्य प्राकृतिक जल - स्रोतों के भंडार हैं । इनमें ऐसी दुर्लभ वनस्पतियाँ सुरक्षित रहती हैं जो सारे जग को स्वास्थ्य प्रदान करती हैं । गंगा - जल की पवित्रता का कारण उसमें मिली वन्य औषधियाँ ही हैं । इसके अतिरिक्त वन हमें, लकड़ी, फूल - पत्ती, खाद्य - पदार्थ, गोंद तथा अन्य सामान प्रदान करते हैं ।

वन - संरक्षण की आवश्यकता - दुर्भाग्य से आज भारतवर्ष में केवल २३% वन रह गए हैं । अंधाधुंध कटाई के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई है । वनों का संतुलन बनाए रखने के लिए १०% और अधिक वनों की आवश्यकता है । जैस - जैसे उद्योगों की संख्या बढ़ती जा रही है, वाहन बढ़ते जा रहे हैं, वैसे - वैसे वनों की आवश्यकता और अधिक बढ़ती जाएगी ।

(ग) **महत्त्व** - यह सृष्टि परमात्मा की अनुपम देन है । परमात्मा ने नदी, सागर, झीलें, पर्वत और ख□ - खाई बनाए हैं । सबका अपना - अपना महत्त्व और अपना - अपना सौंदर्य है । सृष्टि के आँगन में खड़े पर्वत बरबस ही सबकी आँखों को खींचते हैं । उनका सौंदर्य और प्रभाव अचूक होता है । कोई भी प्राणी उनके उठे हुए रूपाकार की अनदेखी नहीं कर सकता ।

मानव - प्रेम - मानव सहज रूप से पर्वतों का प्रेमी है । जब भी कोई मनुष्य पिकनिक या मनोरंजन यात्रा के बारे में सोचता है, तो उसकी दृष्टि सबसे पहले पर्वतों की ओर जाती है । मनुष्य पर्वत पर चढ़कर आनंदित अनुभव करता है । हमारे पूर्वजों ने भी अनेक पर्वत - यात्राएँ की थीं । श्री रामचंद्र ने विंध्याचल पर्वत को लाँघा था । श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अंगुलि पर धारण किया था । महर्षि वशिष्ठ, भीम, अर्जुन आदि पात्रों ने पर्वतों का खूब भ्रमण किया था । वर्तमान में भी पर्वतों का भ्रमण करने सर्वाधिक पर्यटक आते हैं ।

संरक्षण के प्रति जनता का कर्तव्य - पर्वतीय सौंदर्य पर दो बड़े खतरे हैं - पहला खतरा है - वृक्षों की अंधाधुंध कटाई । दूसरा खतरा है - आबादी के कारण बढ़ता प्रदूषण । ये दोनों खतरे मानव ने स्वयं अपनी करतूतों से पैदा किए हैं । वृक्ष पर्वतों के सिर पर उगे केश हैं । जैसे

केशविहीन मनुष्य कुरूप प्रतीत होता है, उसी भाँति नंगी - बूची पहाड़ियाँ मलबे का ढेर जान पड़ती हैं । अतः पर्वतों को वृक्षों से संपन्न करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है । सरकार ने जंगल काटने पर प्रतिबंध लगाया है । फिर भी धन के लोभी ठेकेदार चोरी - छिपे पेड़ काटने में लगे हुए हैं । यह चिंतनीय है । जनता का यह भी कर्तव्य है कि वह नंगी - बूची पहाड़ियों को फिर - से हरा - भरा करे ।

नैनीताल, मसूरी, शिमला आदि लोकप्रिय पहाड़ियों को देखने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि यहाँ प्रदूषण पाँव पसारने लगा है । महानगरीय सभी सुख - सुविधाएँ यहाँ जमा हैं । इसलिए धुआँ, गंदगी, शोर भी बढ़ने लगा है । यह चिंतनीय है । पर्वतों के स्वस्थ - स्वच्छ अंचल में धुएँ और शोर को रोका जाना चाहिए । इन्हें कोटे - छाँटे बिना इनका सौंदर्य - पान करना चाहिए ।

A.13. **[5]**

क. ख. ग.
.... पता,
दिनांक - 15-3-2016
प्रबंधक
हिंदी बुक सेंटर इंदौर

विषय : कटी- फटी पुस्तकों की वापसी ।

महोदय

बड़े खेद के साथ आपकों सूचित करना पड़ रहा है कि आपने मुझे जो निम्नलिखित पुस्तकें भेजी हैं, वे कटी-फटी तथा पुरानी है । यह व्यवहार आपकी प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं है । मैं ये पुस्तकें वापस लौटा रहा हूँ । आप शीघ्र ही इनकी जगह नई पुस्तकें भिजवाएँ । आपने जो मेरा समय नष्ट किया है, उसकी भरपाई नहीं हो सकती । अब कृपया पुस्तकें शीघ्र भेंजे । पुस्तके निम्नलिखित हैं -

कामायनी : जयशंकर प्रसाद
उर्वशी : दिनकर

भवदीय
क. ख. ग.

अथवा

सेवा में
संपादक महोदय
दैनिक हिंदुस्तान
नई दिल्ली
महोदय,

विषय : लाउडस्पीकर के शोर के संदर्भ में शिकायती पत्र ।

आपके प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के माध्यम से मैं मुहल्ले में लाउडस्पीकरों के शोर के कारण हो रहे कष्ट का वर्णन करना चाहता हूँ। कृपया इसे 'लोक-वाणी' शीर्षक स्तंभ में प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।

आजकल हमारे मुहल्ले प्रेमनगर में चारों ओर लाउड स्पीकरों के शोर के कारण जीना दूभर हो गया है। मुहल्ले में एक सत्यनारायण भगवान का मंदीर है और एक गुरूद्वारा ऐसा लगता है कि दोनों में होड़ लगी है कि कौन अधिकाधिक ऊँची आवाज में उस सोते हुए बहरे प्रभु को जगाकर अपनी राम-कहानी सुना सकता है ।

आपके पत्र के माध्यम से मैं उन लोगों तक अपनी तथा मुहल्लेवालों की व्यथा पहुँचाना चाहता हूँ जिनके कानोंपर जूँ तक नहीं रेंगती जिनको अब स्वयं जाकर कहना आत्मसम्मान के विरूद्ध लगता है।

भवदीय

विवेक शर्मा

..... मुहल्ला

..... नगर

दिनांक 14-5-2016

A.14. (क) **5**

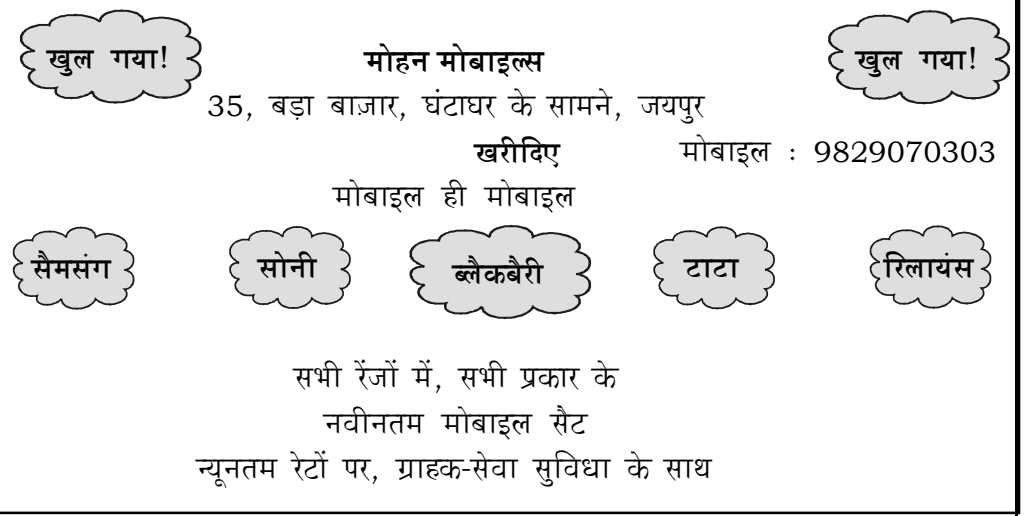

अथवा

विश्वास नहीं होता!

एक लीटर पेट्रोल में

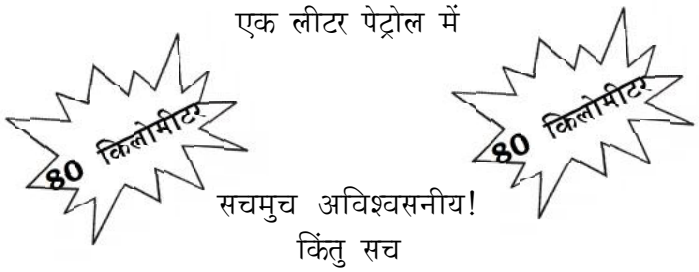

सचमुच अविश्वसनीय!

किंतु सच

आस्था स्कूटी

आज ही लाइए

पेट्रोल की बचत कीजिए!

नई तकनीक, नया डिजाइन, नए रंग, मोहक स्टाइल!

कार्यालय पता: 300, इंडस्ट्रियल स्टेट, पंजाब । **मोबाइल** : 07723456710

❖❖❖❖